प्रीत गंगा



'प्रीत गगा'

मुरारीलाल डालमिया

प्रकाशकाल गणेश चतुर्थी २२वा अगस्त २००१
प्रथम सस्करण सख्या, १०००

प्रकाशक 'अर्चना
५५ जमनालाल बजाज स्ट्रीट
कोलकाता-७०० ००७
दूरभाष २३८ २५३२

मुद्रक आकाश इण्टरप्राईजेज प्रा० लि०
२६५ बी रवीन्द्र सरणी कोलकाता-७०० ००७
दूरभाष २३३ ६१७८

मूल्य १००/- (सौ रुपये)

'PREET GANGA' (A Literary Book of Hindi poetry) by Murarilal Dalmia,
Published by 'ARCHANA' 55, Jamunalal Bajaj Street Kolkata 700 007
Year ended 2001 1st edition 1000 copies printed
Rs 100 00



मेरी जीवन-वाटिका के दो सुमन

अलका चौधरी

एव

अल्पना ड्रोलिया

को

सस्नेह

समर्पित

मुरारीलाल डालमिया






सूची

मुक्तक — पृष्ठ

गीत

उपस्थापन

श्री मुरारीलाल डालमिया से मेरा परिचय ओर सम्यन्ध गत चार दशको से भी अधिक हे। मुझे वे दिन आज भी स्मरण ह जव बगीय हिन्दी परिषद मे सध्या के समय साहित्य काव्य चर्चा किया करते थे ओर उस समय स्व० आचाय ललिताप्रसादजी सुकुल के सान्निध्य म श्री डालमिया अपनी कविताएँ सुनाया करते थे। तत्पश्चात भी उनसे सम्पर्क वरावर बना रहा और गत दशका स लक पर प्रात चक्रमण के समय भी यदाकदा वे अपनी कविताएँ सुनाते थे। उनका प्रथम काव्य ग्रथ शाश्वत एक प्रणाम उन्होने अपनी पत्नी स्वर्गीया सत्यमामा को समर्पित किया। इस ग्रथ मे वे कवि का स्व कथ्य था 'आपको गीतो के भावो मे मेरे मन की पीडा के दर्शन होगे। वह अभाव, वह पावन स्मृति वह पीडा ही उनकी रचनात्मक प्रतिमा को नवीन आयाम देती है। उनका दूसरा काव्य ग्रथ प्रीत गगा हे जिसमे अन्तत वही पीडा वही स्मृति कवि सजोता ह।

भारतीय मान्यता हे 'सुखहि दुखत्यनु घनान्धचारे दिव दीप दर्शनम् सारे दु ख मे सुख की अनुभूति शोमायमान होती ह जेसे घनीभूत अधकार मे दीपक का प्रकाश। इस अनुभूति क अतराल म जहाँ एक ओर जिजीविषा और जिज्ञासा है वह दूसरी ओर सस्कारजनित स्मृति व कल्पना जो मानस की गहराइयो मे एक स्पन्दन अनुस्यूत करती हे ओर अतीत को पुन

वर्तमान के चैतन्य से परिपूर्ण कर एकाग्रता और सर्वाथता का साधन बनती ह। प्रसिद्ध मनोविज्ञानिक फ्रिटजाफ्र काफ्रा ने अपने प्रसिद्ध ग्रथ दि ताओ आफ फिजिक्स मे कहा है जीवन के किसी मोड पर जब किसी विकट सघर्ष की स्थिति नही आती, तब तक व्यक्ति आत्मोन्मुखी नही होता। यही रचनाकार की रचनात्मक सक्रियता है और सृजन की क्षमता विवेक के साथ अपनी कामनाओ की जिजीविषा की पूर्ण उपलब्धि। जीवन के सारे दु ख सताप परिताप अतस की पीडा बन कर हमे कसौटी पर कसते ह ओर किसी असाधारण क्षण मे चेतना को गति सम्पन्न कर मनोविदत्नता से मुक्त करते है और न जाने किस अज्ञात क्षण मे यह असाधारण क्षण कलातीत बन जाता हे। मेरी धारणा हे कि कवि कर्म केवल अनुकरणमात्र नही हे वह तो अनाविल सृजन प्रक्रिया हे जिसकी प्रस्तुति अनुभूति (प्रेरक तत्त्व) स्व स्वेद्य स्थिति(अभिव्यक्ति) और उद्वेलन (कल्पना स्मृति की घनीभूत अवस्था) मे ही सम्भव है। कवि चर्चा का सम्बन्ध सम्पूर्ण व्यक्तित्व से हे कवि की मानसिकता उसके भावो के सवेग उद्वेलन और चेतना प्रकर्ष मे अपने को स्थापित करती है। कल्पना मानस चक्षु है, इसमे चेतन-अवचतन आर अचतन के मध्य सीमा रेखा खीचना या अन्तर रेखाकित करना सम्भव नही क्योकि उसमे नैरन्तर्य रहता है। सवेग अर्थात सविग्न ससार के मोलिक सुखो से निर्लिप्त उदासीन। वह अन्तर का उत्साह है 'सवेग परम ही धर्मे धर्म फलोचित यही सम्पर्क वेग है आतरीक उत्साहो या भाव सत्य से मगल मार्ग मे लगाना। महाकवि पत ने इसी भाव सत्य को स्पष्ट किया है। कहॉ नही है स्नेह सास का बधन सब के उर मे। यह स्नेह का सनातन सम्बन्ध शिवेतर हाकर सान्दर्य की सृष्टि करता है। चित्ते काग्रम भवधानम --यही चित्त का अवधान है अथवा अन्त प्रज्ञा (विजन)। इसी स्थिति मे वर्डसवर्थ ने कहा था ' To me the meanest flower that blows can give me thoughts that are for often too deep in tears'

अज्ञेय ने भी ऐसा ही कहा

'कहा तो सहज पीछे लोट देखेगे नही
पर नकारो के सहारे कब चला जीवन
स्मरण को पाथेय बनने दो
कभी तो अनुभूति उमडेगी पावन का साद्रघन भी वन।

यह प्रसगोल्लेख श्री डालमिया की रचनात्मक प्रक्रिया को समझने मे सहायक होगी। 'प्रीत गगा' 'शाश्वत एक प्रणाम' का ही विस्तार है स्मरण या पाथेय अनुभूति का साद्रघन वन उमडना। इस कृति मे कविताओ के साथ साथ रेखाचित्र है जिनसे काव्य का मर्म शब्द विधान रगो मे प्रतिध्वनित अथवा उद्घाटित होकर अर्थवत्ता सार्थक करता है। इस ग्रथ की कविताएँ मुक्तक मे रची गयी है। मुक्तक अर्थात् भावो की अभिव्यक्ति की मुक्तता अर्थात अपने आप मे जो सम्पूर्ण या अन्य निरपेक्ष हो। ऐसी छन्द रचना ही मुक्तक है जो अनिबद्ध हो 'मुक्तकमन्येननालिगित तस्य सज्ञायाकन् पुन 'एकेन छन्दसा वाक्यार्थ समाप्तो मुक्तकम । प्रीत गगा की प्रत्येक कविता अनिलिगत है–अपने मे पूर्ण, फिर भी समग्र दृष्टि से उसमे तारतम्य और क्रमबद्धता है क्योकि इस कृति की अन्तर्भूमि मे कवि के जीवन की प्रत्यक्ष छाया उद्भासित होती है। कुछ काव्योचरण इसे स्पष्ट करेगे–

मुझको बहुत भले लगत ह रग बिरगे फूल चमन मे
बहुत सहज है बाग लगाना उसे सजाना बहुत कठिन है।

पुन

'हर पल हर क्षण सूना सूना लगता है।
घर आगन मुझको वीराना लगता है।।
भीगी भीगी पलके नयन उनीदे से।
एकाकीपन भी अब अच्छा लगता है।

टूटे जो सम्बन्ध जोडना बहुत कठिन है।
मिल जाये मनमीत छोडना बहुत कठिन है।।
बडे यतन से फूलो को माली चुनता है।
फूलो के सग फूल तोडना बहुत कठिन है।।'

जीवन के अज्ञात बीहडो पर जब कोई सगी साथी मिलता है तब इस दुर्गम पथ को पार करना भी सकल्प बनता है। जीवन की यह अनुभूति विरह मे अतिशय होकर इस पीडा को सार्थक और सटीक करती है जिसका उल्लेख मने ऊपर किया ह। इसी से वेदना भरे गीत ही मधुरतम होते है। श्री डालमिया का कथन है–

'तुम ने गाया मुझे लगा ज्यो मिली कठ को वाणी
मिली राम को सीता, शिव को पार्वती कल्याणी
साँस साँस मे तुम्ही बसी हो तुम्ही प्यार का सागर
मेरे आँसू गीत तुम्हारे इनकी प्रीत पुरानी।

इन पक्तियो को पढकर मुझे बच्चन की कविता याद आ गई 'तुम गा दो मेरा गान अमर हो जाये। तुम छू दो मेरा प्राण अमर हो जाये।'

प्रीत गगा मे अखड और अव्याहत प्रेम की सरिता प्रवहमान है। कवि का मानस ऊर्जा मे अवगाहन करता हे कभी व्यक्तिगत स्तर पर कभी प्रकृति के सदर्भ मे तो कभी बिम्बो का आधार ग्रहण कर व्यापक स्तर पर उसका यही भाव सत्य है ऐसे शोक गीत ही सृजक की अतरग भावभूमि को उर्वर बनाते हैं और जीवन से साक्षात्कार करते है। कविता मूलत बोद्धिक स्तर पर प्रभवविष्णुता नही करती न आवेश मे उसमे आकुलता व्याकुलता ही सवेग का उत्थान हे अभिनिवेश। मे श्री मुरारीलाल की इस कृति का स्वागत करता हूँ ओर यह कामना भी कि प्रीत की यह गगा भविष्य मे गगासागर बनेगी।

कल्याणमल लोढा

श्री कृष्णा जन्माष्टमी
दिनाक २०५७

बीस वर्ष की युवावस्था मे अर्थात् पचास के दशक मे 'बगीय हिन्दी परिषद' मे एक श्रोता के रूप मे प्रवेश एव कविता पठन पाठन एव लेखन म रुचि। जीवन के अनेक खट्टे मीठे अनुभव एव सन् १९९४ मे अकस्मात् मेरी अर्द्धांगिनी की स्वर्गवास जनित परिस्थितियो ने मेरी प्रथम काव्य पुस्तक 'शाश्वत एक प्रणाम के रूप मे काव्य जगत मे, मेरी उपस्थिति दर्ज कराई।

सच तो यह है कि आज भी हिन्दी भाषा एव साहित्य का मुझे विशेष ज्ञान नही है। हाँ, पाच दशक से मेरा, हिन्दी के प्रति अगाध लगाव एव रुचि रही ह। मैने हमेशा प्रेम गीत लिखे हैं लिखता हूँ एव लिखता रहूँगा। यह भी मानता हूँ कि जीवन मे यदि प्रेम नही तो कुछ भी नही। प्रेम को मे जिन्दगी का मधुरतम छन्द मानता हूँ–

प्रेम का नाता अमिय मकरन्द है
दो ह्रदय का यह अमर अनुबन्ध है
प्रेम मे जो खो गया, वह तर गया
जिन्दगी का यह मधुरतम छन्द है।'

मेरी प्रथम काव्य पुस्तक शाश्वत एक प्रणाम जिसका लोकार्पण मेरे अन्तरग मित्र एव मनीषी, कवि आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री के करकमलो से

सम्पन्न होना एव उनका आशीर्वाद प्राप्त करना म अपने जीवन की एक उपलब्धि मानता हूँ। शाश्वत एक प्रणाम के प्रकाशन के वाद मेरे अनेक कवि मित्र वन्धु वान्धव एव अन्य लोगो ने शुभकामनाये प्रेपित की तो ऐसा लगा कि मेरा जीवन धन्य हो गया।

पत्नी के देहान्त के पश्चात, अकेला रह गया तो मेरी पीडा मेरी 'सगिनी वन गयी। मे विधुर नही रहा एव प्रीत गगा का जन्म हुआ–

'कव मने चाहा था कोई दुख मे मेरा साथ निभाये
कव चाहा एकान्त क्षणो मे कोई प्रिय की याद दिलाये
लेकिन दुनियावालो तुमसे एक निवेदन करता हूँ मे
मेरी पीडा मेरी सगिनि इसे न कोई ठेरा लगाये।

प्रीत गगा मे नहाता रहा हूँ। अपार सुख मिला। जीवन मे प्राणीमात्र को सुख की अनुभूति हो यही कामना है।

'प्रीत गगा मे आपको प्रेम, प्रेम जनित सुख दु ख जीवन के कुछ कटु अनुभव एव प्रेम के प्रति मेरे मन के सीधे सादे भाव मिलेगे। आज मे अपने जीवन के उस दौर से गुजर रहा हूँ जहॉ पहुँच कर मनुष्यमात्र मे एक प्रकार की विरक्ति का भाव पैदा हो जाता है ओर मनुष्य मृत्यु को जीवन के शाश्वत सत्य के रूप मे ग्रहण करता है। इस मुक्तक के द्वारा आप मेरे हृदय की भावनाओ को वखूवी समझ सकेगे–

अन्तिम वेला मे मुझको तुम करूणा से नहला देना
कल्पवृक्ष की शीतल छाया मे तन को सहला देना
अमर वेल की सतरगी चादर तो मुझको भली लगे
सभी मित्र परिवार जनो से गगाजल पिलवा देना।

पचास वर्षो मे लिखा गया था 'शाश्वत एक प्रणाम और मात्र दो वर्षो मे लिखा गया है यह काव्य सग्रह प्रीत गगा । मुझे स्वय भी आश्चर्य होता है इस चमत्कार पर। दो साल की अवधि मे कुछ गीत भी लिखे लेकिन यह 'प्रीत गगा तो मुक्तक प्रधान है जिसे मैंने मात्र ४० दिवसो मे रची है।

कभी कभी ऐसा भी लगता ह कि 'प्रीत गगा' के गीत एव मुक्तक मैने नही लिखे वल्कि किसी अदृश्य शक्ति ने लिखवाये ह चाहे वह मेरी स्वर्गीया पत्नी ही हो।

यह तो एक सुखद सयोग ही है कि आचार्य कल्याणमल लोढा ने, जिनसे मेरा आज पॉच दशक से सम्बन्ध है, इस मुक्तक प्रधान काव्य सग्रह प्रीत गगा' की भूमिका लिखकर मुझे गारव प्रदान किया है। मै विशेष रूप से आभारी हूँ अपने मित्र एव हिन्दी के श्रेष्ठ गीतकार श्री गोपालदास 'नीरज एव कविवर श्री भारतभूषण का जिन्होने आशीर्वाद देकर मुझे प्रोत्साहित किया है। गीतो के चयन से लेकर, प्रकाशन तक के परिश्रम एव सहयोग के लिए मै विशेषरूप से आभारी हूँ श्री नथमलजी केडिया (प्रधान मत्री एव सस्थापक अर्चना) का राजस्थानी रामायण रचयिता श्री अम्बू शर्मा एव कविवर श्री श्यामसुन्दर वगडिया का तथा समय समय पर सुझाव एव सम्पादन मे सहयोग देने के लिये आदरणीय विद्वान श्री रेयतीलाल शाह का।

अर्चना ने इस पुस्तक को प्रकाशित किया है जिससे म अनेक वर्षो से जुडा हुआ हूँ। यह एक ऐसी सस्था है जिसने विगत दो दशको मे अनेक कवि एव कययित्रियो को मच एव प्रचार दिया है। अर्चना मेरी अपनी है, इसे म सादर प्रणाम ही निवेदन कर सकता हूँ।

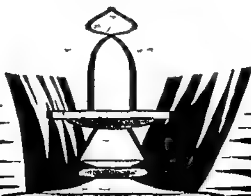
आशा ह मेरी यह प्रीत गगा आप सभी सुधी पाठको को अच्छी लगेगी एव इसमे स्नान करके आपका मन प्रफुल्ल होगा। मैं यह 'प्रीत गगा अपनी पुष्प वाटिका के दोनो सुमनो–अपनी पुत्रियो अलका चाधरी एव अल्पना झ्रोलिया को सस्नेह समर्पित करता हूँ–इस मुक्तक क माध्यम से –

प्रेम का प्रतिरूप है यह प्रीत गगा
भावनाओ का मिलन स्थल, प्रीत गगा
डूब जाओ स्वच्छ तन मन प्राण कर लो
प्रेम का हरिद्वार है यह प्रीत गगा।

मुरारीलाल डालमिया

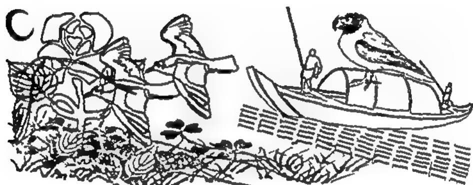


मैने अनगिन गीत लिखे है अब मुक्तक' की बारी आयी
भॉति भॉति के फूल सजाये अब केशर मेरे मन भायी
खुशबू चन्दन की भी महकी गध प्यार की सर्वोत्तम है
फैलाओ तुम गध प्यार की कर लो सब से प्रेम सगायी।



(१)

प्रीत गगा मे नहाकर, तुम मलिन तन प्राण धो लो
प्रीत गगा मे नहाकर, मुदित हो मन द्वार खोलो
स्वय को कर दो समर्पित, मिलन के इस मधुर क्षण मे
प्रेम पथ पर जो चले, तुम भी उन्ही के साथ हो लो।

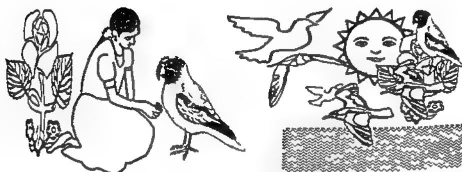


(२)

प्रेम का प्रतिरूप है यह प्रीत गगा
भावनाओ का मिलन स्थल, प्रीत गगा
डूब जाओ, स्वच्छ तन मन प्राण कर लो
प्रेम का हरिद्वार है यह प्रीत गगा।

(३)

माली बैठा देख रहा था, बगिया मे कुछ फूल खिल गये
कुछ कलियाँ तो चटक रही थी, कुछ कलियो के अधर हिल गये
भँवरो को भी खबर हो गयी, गूँज उठी गुजन शहनाई
प्रेम अमर है फूल भ्रमर का, सुबह मिले हर शाम मिल गये।



(४)

मैं बैठी हूँ पलक पाँवडे आज बिछाकर, तुम आ जाओ
मैं बैठी हूँ गीत तुम्हारे आज सजाकर तुम आ जाओ
चाँद सितारे पथ पर ज्योति बिखेर रहे हैं
मैं बैठी हूँ इन नयनो मे दीप जलाकर तुम आ जाओ।

(५)

अब तो बाते करो प्रेम की, मीत मिल गया, रात हो गयी
प्रीत पल गयी, नयन मिल गये, अमृत की बरसात हो गयी
हरसिंगार के फूल खिल गये, खुशबू फैल गयी चन्दन की
फूलो से सुख सेज सजेगी, नन्दन वन से बात हो गयी।

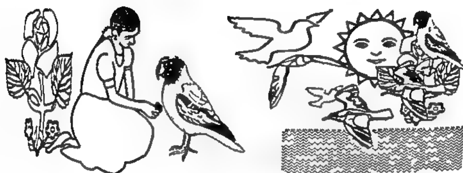


(६)

धन्य हो गया मेरा जीवन सुमुखी तुम्हारा प्यार मिल गया
माली बैठा देख रहा था बगिया का हर फूल खिल गया
गली गली मे शोर मच गया यह डोली किसकी आयी है
देख तुम्हारा रूप मनोहर पत्थर का भी हृदय हिल गया।

(७)

कुछ अपने भी लगे पराये, अनजाने अपने लगते है
कुछ सम्वन्ध वनाये जाते, कुछ सम्वन्ध स्वय वनते हैं
पथ पर अनगिन लोग मिले, कुछ साथ चले कुछ विछड गये थे
कुछ ऑसू वरवस ढल जाते, कुछ ऑसू पीने पडते है।



(८)

सम्वन्ध नही बनते खुद ही सम्वन्ध बनाये जाते है
जीवन पथ पर जो साथ चले वो गले लगाये जाते हैं
क्या पाप पुण्य क्या भला बुरा, इसकी परिभाषा वहुत कठिन
मन्दिर मस्जिद, मदिरालय मे अदाज लगाये जाते है।

(९)

पल छिन का यह साथ तुम्हारा, मुझे लगा अमृत की धारा
प्रथम मिलन, वह आत्म समर्पण, कितना रसमय मिलन हमारा
आज मुझे एकान्त क्षणो मे, बहुत सताती याद तुम्हारी
कभी कभी ऐसा लगता है, शायद तुमने मुझे पुकारा।

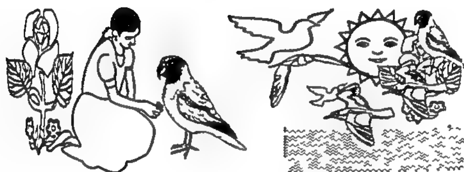


(१०)

याद तुम्हे भी होगा वह दिन, हम तुम पहली बार मिले थे
आम्रकुञ्ज की घनी छाँव मे, कैसे बारम्बार मिले थे
एक दूसरे के दीवाने नयन नयन से उलझ गये जब
अमृत की बरसात हो गयी, जीने के आधार मिले थे।

(११)

कल रात तुम्हारी याद आई, मै रोया सारी रात प्रिये
तन की ज्वाला को भडका दे, यह कैसी है वरसात प्रिये
अपनो ने मुझको ठुकराया, लेकिन गैरो ने प्यार दिया
तुम आ जाती यदि एक वार, कह देता मन की वात प्रिये।



(१२)

वहुत सहज है अश्रु वहाना ऑसू पीना वहुत कठिन है
वहुत सहज है प्रीत लगाना प्रीत निभाना वहुत कठिन है
मुझको वहुत भले लगते है रग विरगे फूल चमन मे
वहुत सहज है वाग लगाना वाग सजाना वहुत कठिन है।

(१३)

बहुत सहज है पाँव फिसलना बचकर चलना बहुत कठिन है
बहुत सहज पाकर खो देना, खोकर पाना बहुत कठिन है
दुनिया के इस रंग-मंच पर, आना-जाना लगा रहेगा
बहुत सहज मंदिरालय जाना जाकर आना बहुत कठिन है।



(१४)

बहुत जी लिया इस जीवन को, थोड़ा सा जीवन बाकी है
अनगिन विष के घूँट पी लिये, अन्तिम विष पीना बाकी है
नहीं यहाँ कोई घर अपना नहीं मिली आँचल की छाया
अर्थी लोग सजाये बैठे   कुछ साँसे अब भी बाकी है।

(१५)

वहुत सहज सम्बन्ध बनाना, किन्तु निभाना बहुत कठिन है
बहुत मिलेगे राही पथ पर, साथ निभाना बहुत कठिन है
सुख के साथी बहुत मिलेगे, दु ख मे कोई साथ न देता
बहुत सहज है अमृत पीना, विष का पीना बहुत कठिन है।



(१६)

कितनी रात अभी बाकी है, कितनी बात अभी बाकी है
कितने सावन बीत गये कितनी बरसात अभी बाकी है
क्या बाकी है बीत गया क्या यह जीवन घट तो रीता है
शह पर शह खाता आया हूँ लेकिन मात अभी बाकी है

(१७)

कब मैने चाहा था कोई दु ख मे मेरा साथ निभाये
कब चाहा एकान्त क्षणो मे, कोई प्रिय की याद दिलाये
लेकिन दुनियावालो तुमसे एक निवेदन करता हूँ मैं
मेरी पीडा, मेरी सगिनि, इसे न कोई ठेस लगाये।

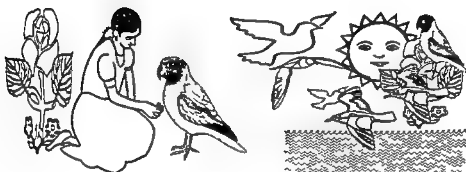


(१८)

बन्द पडे है द्वार हृदय के प्राणप्रिये अब खोलो
मन की पीडा, व्यथा कथा अनकही आज तक बोलो
व्यर्थ सोचना इस जीवन में क्या खोया क्या पाया
सहलाये जो मन की पीडा, उस पर प्यार उँडेलो।

(१९)

सहज शीतल जल हृदय मेरा, नहा लो
गीत मेरे प्रीत के स्वर–गुनगुना लो
यह धरा तो एक माया जाल है बस
तुम हृदय से मोह का पर्दा हटा लो।



(२०)

कवि मर जाता लेकिन कविता सदा सुहागिन होती
बुझ जाता है दीप, मगर हर वर्ष दिवाली होती
दुनियावालो बात पते की कहता हूँ मैं सुन लो
कोई अपना नही यहाँ पर नाहक दुनिया रोती।

(२१)

ध्यान लगाकर चलनेवाला मँजिल पा जाता है
मोहजाल मे फँसा हुआ, पगपग पर रुक जाता है
पथ पर मायाजाल बिछा है, दलदल भी पाओगे
जिसका मन गंगा जल होता, पार उतर जाता है।

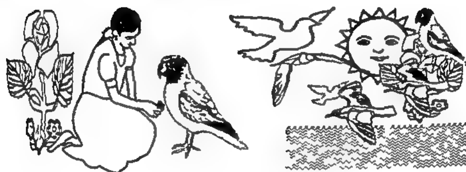


(२२)

थाल हाथ मे लिए पुजारी मन्दिर मे जाता है
दुआ माँगने कोई मुल्ला मस्जिद में जाता है
सब की अपनी-अपनी डफली, अपना-अपना राग
पीनेवाला दर्द भुलाने मदिरालय जाता है।

(२३)

नयनो की भाषा पढना आसान नही है
आशा और निराशा का अवसान नही है
प्रेम अमर है, पूजा और समर्पण मेरा
जो न समझ पाये वह तो इन्सान नही है।



(२४)

कल फिर याद तुम्हारी आयी रोया सारी रात
कुछ स्मृतियो मे कुछ गीतो मे खोया सारी रात
अब तो पीडा लगे सुहानी, एकाकीपन भला लगे
तुमने जो भी प्यार दिया था, ढोया सारी रात।

(२५)

सावन मे रिमझिम रिमझिम बरसात सुहानी लगती
चाँद चॉदनी के साये मे रात सुहानी लगती
चाँदी जैसा रूप तुम्हारा, चन्दन-जैसी काया
पिया मिलन की वेला मे हर वात सुहानी लगती।

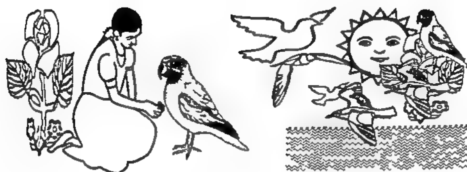


(२६)

तुम विन कैसे दिन वीते है, क्या वतलाऊँ
अपने कैसे हुए पराये, क्या वतलाऊँ
मन की पीडा कोई भी तो समझ न पाता
अपनो ने ही मुझे रुलाया क्या वतलाऊँ।

(२७)

मैने देखा हर प्राणी को प्यार चाहिए
पुष्प चाहिए और पुष्प का हार चाहिए
गीतो की सौगन्ध, वात मन की कहता हूँ
विश्व कुटम्ब लगे, ऐसा ससार चाहिए।



(२८)

मैंने गीतो मे पीडा को अपनाया है
तन को, मन को और स्वय को दुलराया है
सच कहता हूँ प्राण प्रिये तेरी सुधियो ने
कभी रुलाया और कभी मन सहलाया है।

प्रीत–गगा

(२९)

मै पथहारा, मुझे दिशा का ज्ञान नही है
भले-बुरे की भी कोई पहचान नही है
मिले अगर आदर्श पुरुष, म शीश झुका दूँ
मन्दिर मे भी पत्थर है, भगवान नही है।



(३०)

मौत मेरे द्वार पर तुम क्यो खडी हो मै अमर हूँ
पाप के घट भर गये, उनको उठा लो, मै अमर हूँ
प्रेम के मै गीत लिखता, प्रेम का मै हूँ पुजारी
प्रेम तो मरता नही है लौट जाओ मै अमर हूँ।

(३१)

विष का हो या अमृत का घट, मुझको फर्क नही पडता है
जीवन दु:खमय हो या सुखमय मुझको फर्क नही पडता है
साथ किसी ने दिया नही तो, एक अकेला चलता आया
पीडा हो या प्रेम तुम्हारा, अब तो फर्क नही पडता है।



(३२)

आज किसी की मौत हो गयी उसका खेल तमाम हो गया
अर्थी लोग उठाने आये, राम सत्य सतनाम हो गया
चिता जल गयी कहा किसी ने, बडा भला था मुक्ति मिल गयी
मैने देखा वह तो कवि था अमर हो गया नाम हो गया।

(३३)

प्रेम मिले प्रेम का विस्तार कीजिये
प्रेम मिले प्रेम को स्वीकार कीजिये
सूना न हो यह पथ सदा चहकता रहे
प्रेम का यह रास्ता गुलजार कीजिये।



(३४)

साकिया कुछ अदब से महफिल मे आना
भूल कर भी तुम न घूँघट को उठाना
मयकदे मे गम के मारे आ गये है
होश कुछ बाकी बचे, इतना पिलाना।

(३५)

मुझको तुम्हारे प्यार ने जीना सिखा दिया
हँसना सिखा दिया, कभी रोना सिखा दिया
सुनते हैं बुरी चीज है कम्बख्त आशिकी
दीवानगी इतनी बढ़ी, पीना सिखा दिया।



(३६)

जीवन पथ पर चलते चलते बिछड गये हम
जाने तुमने क्या कह डाला, बिखर गये हम
आँसू नयनो मे भर आये नींद न आयी
खडी द्वार पर मौत देख कर सिहर गये हम।

(३७)

चुपके-चुपके तुम मेरे आँगन मे आना
जी भरकर अमृत पीना, कुछ मुझे पिलाना
व्यथित हृदय को शान्ति मिलेगी, प्रीति पलेगी
गीत लिखूँगा प्रीत प्यार के, सस्वर गाना।



(३८)

स्पर्श तुम्हारा, जीने का आधार वन गया
प्यास बुझी तन मन की अमृत धार वन गया
प्राण प्रिये, यह जीवन मेरा धन्य हो गया
काशी, मथुरा वृन्दावन, हरिद्वार वन गया।

(३९)

खुला हुआ है द्वार हृदय का, तुम आ जाना
कर लेना विश्राम दो घडी, तुम आ जाना
मेरे अन्तर की पीडा को प्रीति मिलेगी
मुक्ति मिलेगी इस जीवन को, तुम आ जाना।



(४०)

जनम जनम के साथी मीत मनोहर हो तुम
गगाजल हो मधु से भरा सरोवर हो तुम
मुक्त शशि का हास, जल निधि की तरगे
गौरीशकर की अद्वितीय धरोहर हो तुम।

(४१)

साथ साथ चलना तो एक बहाना था
मै उसकी थी, वह मेरा दीवाना था
आत्म समर्पण की वेला मे, हमदोनो ने
कभी किए जो वादे, उन्हे निभाना था।

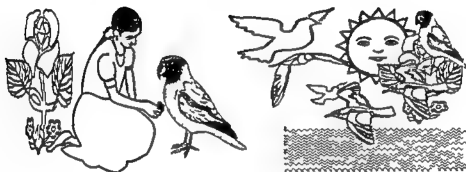


(४२)

आज तुम्हे मै हरी दूब से नहलाऊँगा
सोने की करधनी प्यार से पहनाऊँगा
माथे पर चन्दन का टीका, नथ हल्की सी
पहनाऊँ, फिर तन को मन को सहलाऊँगा।

(४३)

गगाजल से सुवह नहाना अच्छा लगता
मन्दिर मे फल फूल चढाना अच्छा लगता
किन्तु शाम होते ही मदिरालय चल देता
साकी का वह जाम पिलाना अच्छा लगता।



(४४)

टूटे जो सम्बन्ध, जोडना बहुत कठिन है
मिल जाये मन मीत, छोडना बहुत कठिन है
बडे जतन से फूलो को माली चुनता है
फूलो के सग शूल तोडना बहुत कठिन है।

(४५)

तुम से क्या सम्बन्ध बनाया, तुम क्या जानो
मीत बनाया, गले लगाया, तुम क्या जानो
अब तो लगता प्यार धरा से खत्म हो गया
कैसे दिल का दर्द भुलाया, तुम क्या जानो।



(४६)

जिन्दगी का पात्र खाली हो गया
कुछ नही बाकी बचा सब खो गया
मर्म-भेदी पीर मन को सालती
प्रेम जाने किस गली मे खो गया है

(४७)

हो गयी जवान आज अधखिली कली
छोटे-से आँगन मे प्यार मे पली
भँवरो ने देखा, वेहाल हो गये
गुनगुनाने लग गये, मच गयी खलवली।





(४८)

मुझे मिल गयी छाँव तुम्हारे आँचल की
वडी सुहानी लगती सरगम पायल की
लेप करो यदि हल्दी चन्दन प्रेम का
मरहम पट्टी कर देता है घायल की।

(४९)

मदिरा पीकर जीने का अभ्यस्त हो गया
विना तुम्हारे प्राणप्रिये पथ भ्रष्ट हो गया
अनगिन इच्छाओ ने मुझको घेर लिया है
पास बुला लो, इस जीवन से पस्त हो गया।

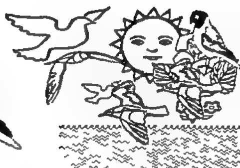


(५०)

अमृत की गागर छलकाऊँ, आओ तो
माथे चन्दन तिलक लगाऊँ आओ तो
रूप तुम्हारा, एक नई दुलहन लगता
चित्र बनाऊँ, घूँघट जरा हटाओ तो।

(५१)

साकी मेरी, मै उसका दीवाना था
मदिरालय जाना तो एक बहाना था
साकी ने जब जाम पिलाया हाथो से
अमृत रस था, उसको मुझे पिलाना था।

(५२)

प्यार करो प्यार तो उमग है तरग है
गीत है सगीत है मस्ती भरा अनग है
जिसने इसे पा लिया निहाल हो गया
चढ गया तो चढ गया यह अजीब रग है।

(५३)

प्रेम एक गीत है, बस गुन गुनाइये
प्रेम पूजा है इसे सबको बताइये
प्रेम अमृत धार है, मिल जाय तो कही
पीजिये खुद भी इसे, सबको पिलाइये।

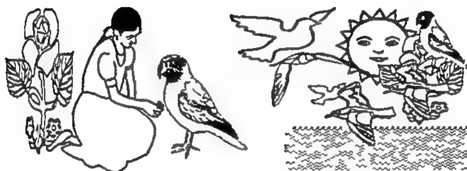


(५४)

चन्द्रवदन पर अलके नाचे इतराये
पवन झकोरे आये आँचल उड जाये
प्राणो मे हलचल स्पन्दन कुछ अजव व्यथा
नयन नयन से मिले परस्पर झुक जाये।

(५५)

बगिया मे फूलो को खिलते देखा होगा
पत्थर दिल को यहाँ पिघलते देखा होगा
जिसने प्याला पिया प्रेम का, खुशनसीब वो
मन्दिर मे प्रतिमा को सजते देखा होगा।



(५६)

शीश लगा लूँ अजुरि भरकर प्यार मुझे दो
मीत बना लूँ जीने का आधार मुझे दो
स्नेह तुम्हारा सम्वल मेरा और प्रेरणा
देव बना लूँ पूजा का अधिकार मुझे दो।

(५७)

आँसू अनेक किस्म के होते है दोस्तो
आँसू खुशी के गम के भी होते है दोस्तो
सूखे हुए आँसू अगर तुम देखना चाहो
देखो किसी गरीब की आँखो मे दोस्तो।



(५८)

जाने पहचाने अनजाने लगते
पैसे से अब नाते रिश्ते बनते
पैसा ही सब कुछ, पैसा परमेश्वर
पैसे के पीछे दीवाने लगते।

(५९)

हर पल हर क्षण सूना सूना लगता है
घर-आँगन मुझको वीराना लगता है
भीगी भीगी पलके, नयन उनीदे से
एकाकीपन भी अब अच्छा लगता है।





(६०)

जीवन एक जुआ है जी भर खेलो
जीत कभी तो कभी हार भी ले लो
विष का पान करो अमृत भी पीओ
फूलो के सग काँटो को भी झेलो।

(६१)

अन्तिम वेला मे मुझको तुम, करुणा से नहला देना
कल्पवृक्ष की शीतल छाया मे तन को सहला देना
अमर वेल की सतरगी चादर तो मुझको भली लगे
सभी मित्र, परिवार जनो से गगाजल पिलवा देना।



(६२)

सुबह शाम पूजा वन्दन करता हूँ
वाणी का मन से अर्चन करता हूँ
गीतो मे जो स्वय मुखर हो जाती
उस पीडा का अभिनन्दन करता हूँ।

(६३)

चॉद-चॉदनी कभी नही मिलते है
पत्थर दिल क्या कभी कही हिलते है
छन्दवद्ध गीतो के साये मे ही
भावो के नूतन अकुर खिलते है।




(६४)

प्रेम का नाता अमिय, मकरन्द
दो ह्रदय का यह अमर अनुवन्ध
प्रेम मे जो खो गया वह तर ग
जिन्दगी का यह मधुरतम छन्द

(६५)

जब निगोडे नयन, नयनो से उलझते
प्रीत की गागर छलकती –तन महकते
प्यार देता प्रेरणा कुछ दर्द देता
जब मिले दोनो, निराले गीत बनते।



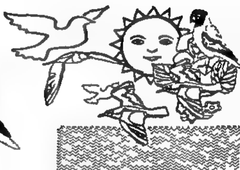
(६६)

उनके आने पे रात हो जाये
बिजली चमके बरसात हो जाये
मेरे पहलू मे सकून मिले उनको
आँखो-आखों मे बात हो जाये।

(६७)

हर सन्ध्या हर रात सुहानी लगती
सावन मे बरसात सुहानी लगती
पिया मिलन मे जीत हार बेमानी
कभी कभी तो मात सुहानी लगती।





(६८)

हमने दुनिया मे सबको अपनाया
साये को भी हमने गले लगाया
प्रेम तपस्या और साधना पूजा
गीतो मे भी पूजा, शीश लगाया।

(६९)

कुछ सम्बन्ध सुहाने लगते है
कुछ अपने बेगाने लगते है
यह दुनिया तो एक अजूबा है
मुझको सब दीवाने लगते है।



(७०)

प्रेम का आधार होता है
प्रेम का विस्तार होता है
प्रेम मे दुविधा नही होती
दो-हृदय का प्यार होता है।

(७१)

प्रेम का सम्बन्ध ही सम्बन्ध है
जो समझ पाता नही, मतिमन्द है
प्रेम मीरा ने किया, विष पी लिया
प्रेम अमृत है, अमर अनुबन्ध है।



(७२)

बन्द हो गया द्वार प्रेम का, क्या बतलाऊँ
मर्माहत तन प्राण हो गये क्या बतलाऊँ
प्राण प्रिये तुम मेरी मर्मव्यथा मत पूछो
ममता मृत्युदश बन गयी, क्या बतलाऊँ।

(७३)

कुछ सम्बन्ध निराले होते हैं
कुछ अनुबन्ध अजाने होते है
मदिरालय मे पीनेवालो के
कुछ अन्दाज सुहाने होते हैं।



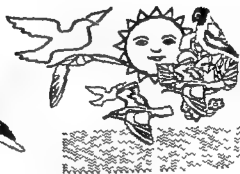
(७४)

कुछ लोग मिले थे राहो में
हो गये समर्पित बाहों में
अन्तिम बेला में जब देखा
सब लोग बँधे थे चाहों में।

(७५)

पैसा है मृग-मरीचिका, सब दौड रहे हैं
पैसे के लिए प्रियजनो को छोड रहे हैं
अब आदमी को आदमी अच्छा नही लगता
सम्बन्ध जो मधुर थे कभी, तोड रहे हैं।





(७६)

मैंने बच्चन का मन देखा   भली लगी उसकी मधुशाला
नीरज की पाती भी देखी   मुझे लगा अमृत का प्याला
यह दुनिया कितनी विशाल है   मैं क्या जानूँ इसकी महिमा
एक अकेला चलता आया   प्रेम नाम की जपता माला।

(७७)

कल तुम मिली राह पर मुझको, जैसै कोई प्रीत पुरानी
मान सरोवर, स्वर्ग धरा पर, या फिर कोई नयी कहानी
मैंने जब आँसू ढलकाये, नयन तुम्हारे भी भर आये
सुख दु:ख सब कह डाले मैंने, तुम चुप, निकली चतुर सयानी।

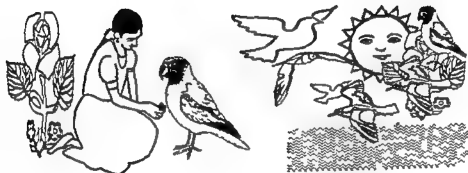


(७८)

तुम तो अपलक देख रही थी, अपनी पीडा दर्द छिपाया
नयनो से अमृत बरसा कर, मेरे तन मन को नहलाया
लेकिन वंह दिन दूर नही है, जब तुम मन की व्यथा कहोगी
प्रीत प्रेम की बात करोगी, जब भी मैने तुम्हे बुलाया।

(७९)

मुझको अपनी पीडा दे दो, अपना प्यार तुम्हे दे दूँगा
पलको के कुछ आँसू दे दो, मन का हार तुम्हे दे दूँगा
सुख दु ख जीवन के दो पहलू, सदा रहे है सदा रहेगे
मेरे गीतो को स्वर दे दो, अमर सुहाग तुम्हे दे दूँगा।



(८०)

नही प्यार की कोई सीमा यह असीम है प्यार अमर है
साथ मीत का सदा सुहाना आत्म समर्पण प्रीत अमर है
इसका तो सम्बन्ध हृदय से तन का कोई काम नही है
तुम लगती हो राधा, मीरा इन दोनो का प्रेम अमर है।

(८१)

एक तुम्ही थे जीवन पथ पर जिसने मेरा साथ निभाया
जीने का आधार मिल गया, तुम ने तो बस गले लगाया
तुम क्या जानो, कैसा सुख मिलता है जब मै तुम्हे निहारूँ
तन का मन का ताप मिट गया, तुम ने तो बस हाथ दबाया।

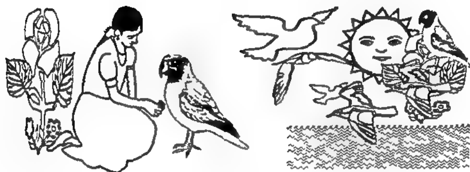


(८२)

कब तक मुझ से दूर रहोगी कब तक अश्रु न बहने दोगी
तुम मेरी शाश्वत कविता हो मन की बात न कहने दोगी
तुम क्या जानो प्रेम दिवाना पत्थर को भी पिघला देता
ऐसी औषध तुम्हे पिलाऊँ तुम अमृत घट बनी रहोगी।

(८३)

चन्दनी हवा चली, सिहर गयी कली-कली
गध प्रेम की उडी, निखर गयी गली-गली
अब तो बात फैल गयी प्यार की, बहार की
तृप्ति मिली नयनो को, प्रीत की बगिया खिली।



(८४)

तुम ने गाया मुझे लगा ज्यो मिली कठ को वाणी
मिली राम को सीता, शिव को पार्वती कल्याणी
साँस साँस मे तुम्ही बसी हो, तुम्ही प्यार का सागर
मेरे ऑसू गीत तुम्हारे इनकी प्रीत पुरानी।

(८५)

प्रेम भरी इस गागर से मैं आज तुम्हे नहलाऊँगा
जितनी निकट रहोगी मेरे, उतना मन सहलाऊँगा
जीवन की बस चाह यही है, सदा तुम्हारे साथ रहूँ
अमर करूँगा प्यार हमारा, ताज महल बनवाऊँगा।



(८६)

ध्यान लगाकर चलनेवाला मजिल पा जाता है
मोह जाल मे फँसा हुआ कब आगे बढ पाता है
पथ पर माया जाल बिछा है, दलदल भी पाओगे
जिसका मन गगा जल होता पार उतर जाता है।

(८७)

लगी प्यास की आग बुझाने, शम्मा पर परवाने आये
तन की मन की प्यास मिटाने, मदिरालय दीवाने आये
कब अधरो की प्यास बुझी है, यह सारी दुनिया प्यासी है
धरती की भी प्यास अनबुझी, अम्बर ने मधु घट बरसाये।



(८८)

चॉद अमर है, सूर्य अमर धरा अमर आकाश अमर है
मन्दिर मे भगवान अमर है, मस्जिद का अल्लाह अमर है
प्रीत अमर है प्यार अमर है, नारी का शृगार अमर है
मनुज मात्र परिधान बदलता, जनम अमर है मृत्यु अमर है।

(८९)

मैं हूँ अमृत का घट पीओ और पिलाओ
मै हूँ यमुना का तट, तुम बाँसुरी बजाओ
सच कहता हूँ, तुमको राधा मिल जायेगी
एक बार तुम श्याम नाम का दीप जलाओ।



(९०)

तुमको खोकर ऐसा लगता, खो दी मैने दौलत सारी
यह कैसी है किस्मत मेरी, मैंने तो हर बाजी हारी
बिन साथी के, विना प्रेम के, जीने मे कुछ मजा नही है
मुझे अकेला छोड गयी क्यो, तुम निकली पगलायी नारी।

(९१)

गध प्यार की फैल गयी, उन्मुक्त हवाओ मे
प्रेम हो गया मुखरित चचल मस्त निगाहो मे
उनका हर अदाज निराला, साथ लगे सतरगा
स्नेह रागिनी लगी गूँजने दशो दिशाओ मे।



(९२)

प्रेम सुवासित हो जाता मकरद भरी पखुरियो से
बगिया महक उठा करती है फूला से कुछ कलियो से
कोई भी तो प्रेम कथा का जिक्र नही करता है
लेकिन गीत मिलन के गूँजे रात अटारी गलियो से।

(९३)

आज न जाने क्यो मेरा मन, कुछ हलका हलका लगता है
दुआ किसी ने माँगी होगी, मेरा अन्तरमन कहता है
यह भी हो सकता है उनको, मेरी याद सताती होगी
या फिर हृदय तोडने का पछतावा आँसू बन बहता है।



(९४)

एक बार यदि तुम मिल जाती, चलते चलते राहो मे
शायद तुमको भर लेता मैं, अपनी पावन बाहो मे
नयन नयन से बाते होती द्वार प्रीत के खुल जाते
कुछ जादू टोना हो जाता, चचल चपल निगाहों मे।

(९५)

मेरा तन मन प्यासा प्यासा, प्यास तुम्हारी भी बाकी है
मृत्यु द्वार पर खड़े हुए हम, अन्तिम मिलन अभी बाकी है
एक साथ विष पी जाये हम, एक नया इतिहास रचेंगे
अनगिन गीत लिखे, कुछ गाये, अमर गीत लिखना बाकी है।



(९६)

प्रीत प्यार मे बाहुपाश मे, तन का जलना, मन का जलना
बहुत सुहाना लगता होगा, अधरो का अधरो पर पलना
फिर भी प्यास अधूरी रहती व्याकुलता बढ जाती होगी
सच कहना क्या हृदय तुम्हारा सह पायेगी ऐसी छलना

(९७)

तुमने मुझको बहुत सताया, आज न तुमको सोने दूँगा
खुशियो से झोली भर दूँगा, आँचल नही भिगोने दूँगा
आँसू हैं अनमोल तुम्हारे, दुनियावाले समझ न पाते
मैं चुपके चुपके रो लूँगा, लेकिन तुम्हे न रोने दूँगा।

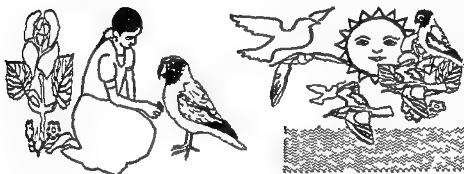


(९८)

एक नयन मे अश्रु तुम्हारे, दूजे मे शीतल जल धारा
कुछ भी समझ नही पाता मैं, यह कैसा है रूप तुम्हारा
ममता की प्रतिमा बनती हो और कभी रणचण्डी काली
मैं करता हूँ आत्म समपर्ण, तुम जीती मैं सब कुछ हारा।

(९९)

आशीर्वाद मुझे तुम दे दो, सारे पुण्य तुम्हे दे दूँगा
कुछ अपनी पीडा भी दे दो, खुशियो से झोली भर दूँगा
खुशबू चन्दन की फैलेगी, महक उठेगी गध प्यार की
तुम अपना पावन मन दे दो, पुष्पित नन्दन वन दे दूँगा।



(१००)

शायद मै इस योग्य नही था आशीर्वाद नही ले पाया
मैंने अनगिन पाप किये है एक पुण्य भी नही कमाया
झोली मे कुछ भी दे देती, पाकर तृप्ति मुझे मिल जाती
अब जाने कब शान्ति मिलेगी, मैंने जीवन व्यर्थ गँवाया।

(१०१)

कही पढा था भीख न माँगो, इससे तो अच्छा मर जाना
साधु भीख न माँगेगा तो, कैसे जीयेगा विन खाना
क्या घट जाता यदि झोली मे, मुट्ठी भर चावल दे देती
आशीर्वाद तुम्हे मिल जाता, पा जाती अनमोल खजाना।



(१०२)

तुम चाहे जितनी पीडा दो, आशीर्वाद हृदय से दूँगा
मेरा मन पावन जल धारा, तन मन के सब ताप हरूँगा
नीलकठ मैं गोरीशकर अमृत भी विष भी पी लूँगा
लेकिन तुम्हे वचन देता हूँ तुमको तो बस अमृत दूँगा।

(१०३)

स्पर्श हमारे प्रथम मिलन का और तुम्हारा आत्म समर्पण
अधरो की वह प्यास तुम्हारी, नयनो का वह मौन निमत्रण
सच कहता हूँ प्राण प्रिये, वे मादक क्षण, वह मिलन यामिनी
मिलन पर्व वह कितना पावन, जैसे राधा का वृन्दावन।



(१०४)

बहुत सहज है गाँठ लगना, गाँठ खोलना बहुत कठिन है
बहुत सहज है झूठ बोलना, सत्य बोलना बहुत कठिन है
मैने देखा इस दुनिया मे पाप कही तो पुण्य कही है
बहुत सहज है पाप जोडना, पुण्य जोडना बहुत कठिन है।

(१०५)

वहुत कठिन यह तत्व समझाना, तुम किस के हो कौन तुम्हारा
कहो कहाँ से आये हो तुम, और कहाँ गन्तव्य तुम्हारा
मुट्ठी बाँध यहाँ आये थे, खाली हाथ पडेगा जाना
हर प्राणी से प्रेम करो तुम, प्रेम अमर, यह अमृत धारा।

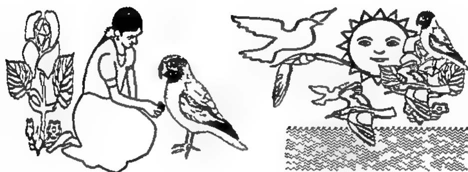


(१०६)

सोना चाँदी, हीरा पन्ना, मुझको लगता गोरख धधा
पैसे ने क्या जाल विछाया, बना दिया मानव को अधा
प्रेम धरा से मिट जायेगा, यदि तुम फिर अवतार न लोगे
हे राधा के श्याम सलोने, धरती पर लावो शिव गगा।

(१०७)

तुम शीतल जल की धारा हो, मै जी भर कर स्नान करूँगा
तुम मधुरस की गागर हा मे अधरा से मधु पान करूँगा
तुम वन जाओ प्रीत दिवानी, जेसे राधा मीरावाई
पाप पुण्य सव तुम्हे समर्पित, अर्पित तन मन-प्राण करूँगा।



(१०८)

तुमने मुझे उढायी चादर, वह तो कितनी स्नेह भरी थी
भवसागर भी पार कराया वह तो अद्‌भुत एक तरी थी
सुखद सुहानी नीद आ गयी, लगी प्रेम की वारिस होने
पाप धुल गये मन की वगिया नन्दन वन सम हरी हरी थी।

(१०९)

मैने विन सोये काटी है, तुम क्या जानो कितनी राते
फिर भी कथा अधुरी ही है, अव तो पूर्ण करो सव वाते
प्यास कभी क्या मिट पायी है, आशा भी है एक छलावा
अव तो ले लो शरण तुम्हारी, तोड चुका सव रिश्ते नाते।



(११०)

तुम लगती शाश्वत कविता सी, मै हूँ शाश्वत छन्द तुम्हारा
साथ रहे हम साथ रहेगे, अमर प्रेम अनुबन्ध हमारा
मुझको पीडा मिली धरा पर, तुम प्रतिमा हो प्रीत प्रेम की
प्रेम मुझे यदि कुछ दे दोगी, मिल जायेगा मुझे किनारा।

(१११)

भूल गये हम गाँधी और सुभाष को
भारत के गौरवशाली इतिहास को
नेताओ! शोषण समाज का बन्द करो
अर्जित कर लो जन मन के विश्वास को।



(११२)

भारतदेश महान हमारा नारा है
हम भारतवासी, यह देश हमारा है
यह भूमि है सन्तों की, रणवीरों की
मातृभूमि हित मरना धर्म हमारा है।



प्राण प्रिये तुम अपना मुझे बनाओ तो

मन पुलकित हो जाये, तन का ताप मिटे
हर सन्ध्या, हर रात सुहानी बन जाये
शरद चाँदनी की शीतलता प्राणो को
नव उमग दे नयी कहानी बन जाये
अधरो की अनबुझी पिपासा शान्त करूँ
मेरी बाहो के घेरे मे आओ तो
प्राण प्रिये तुम अपना मुझे बनाओ तो।

मैं बन्धन से मुक्त धरा का प्राणी हूँ
मादकता यौवन की, शीतल जल धारा
तिमिर हरण करनेवाला दीपक हूँ म
नील गगन का वासी एकल ध्रुवतारा
तुम मेरे गीतो का अमृत पान करो
बची खुची अधरो से मुझे पिलाओ तो
प्राण प्रिये तुम अपना मुझे बनाओ तो।

सपने मुखरित हो, तारो से माँग भरूँ
हाथो मे हलके से कँगन पहनाऊँ
काजल नयनो मे पॉवो मे पायलिया
अनछूयी ये देह तुम्हारी सहलाऊँ
तुम मेरे ऑगन की पावन तुलसी हो
मन के गङ्गाजल मे स्नान कराओ तो
प्राण प्रिये तुम अपना मुझे बनाओ तो। ❑



बीती बाते याद करे, मन बहलाये।

याद करे वह प्रथम मिलन, स्वर्णिम पल क्षण
आत्म समर्पण तृप्ति परस्पर आलिङ्गन
नयनो से नयनो का मिलना, झुक जाना
अधरो से अधरो का अभिनव अभिनन्दन
साथ साथ जीने की मरने की कसमे
एकबार फिर प्राण प्रिये तन दुलराये
बीती बाते याद करे, मन बहलाये।

याद मुझे है आँचल की शीतल छाया
शरद चाँदनी के साये मे प्रणय कथा
सुबह सवेरे मिलन जनित सुख नयनो मे
प्राणो मे हलचल स्पन्दन कुछ अजब व्यथा
रूप तुम्हारा जादू जैसा अमृत घट
सञ्चित सुधियो को हौले से दुलराये
बीती बाते याद करे मन बहलाये।

याद करे वह माँग-सितारो से शोभित
नथ का अधरो को छू लेना, खिल जाना
पाँवो मे पायल का झनक झनक बजना
नूपुर से निसृत ध्वनि से स्वर मिल जाना
गीत मिलन के अनगिन हमने गाये थे
आज उन्हे स्वर दे सस्वर मिल कर गाये
बीती बाते याद करे मन बहलाये। ☐



तुम नयनो मे काजल जरा लगाओ तो।

खिल खिल जाये रूप नयन मे प्रीत पले
दूर कही लहरो मे हलचल मच जाये
तृप्ति मिले प्राणो को, मन के फूल खिले
गीतो मे भावो के अकुर खिल जाये
हर पल हर क्षण सुखद सुहाना बन जाये
अमर करो गीतो को सस्वर गाओ तो
तुम नयनो मे काजल जरा लगाओ तो।

देखी कितनी बार तुम्हारे नयनो मे
मिलने की अभिलाषा वेगवती सरिता
सागर की लहरो की चचलता देखी
इन्द्रधनुप सी सतरगी शाश्वत कविता
वाणी का सगीत सुरीला बन जाये
मेरे गीतो के सरगम पर गाओ तो
तुम नयनो मे काजल जरा लगाओ तो।

सन्ध्या के सुरमयी क्षितिज के द्वार खुले
गीले केशो को हौले से छिटकाओ
हर राही को मजिल का पथ मिल जाये
दिव्य ज्योति नयनो से पथ पर फैलाओ
कोई नही पराया इस ससार मे
मन गगा मे सब को स्नान कराओ तो
तुम नयनो मे काजल जरा लगाओ तो। ❑



गीतो की बरसात करूँ, तुम गाओ तो।

फूल बिखेरूँ तुम जिस पथ पर पाँव धरो
नयन बिछाऊँ, नया नीड निर्माण करूँ
बाहो मे भर लूँ, ऊरोज प्रकम्पित हो
तृप्ति मिले तन मन को अर्पित प्राण करूँ
द्वार हृदय के खोलूँ, पीडा व्यथा कहूँ
खुलकर मन की बात कहूँ, तुम आओ तो
गीतो की बरसात करूँ, तुम गाओ तो।

प्रथम मिलन के वे मादक क्षण याद करे
कभी न बुझनेवाली प्यास हमारी थी
बढती गयी पिपासा जितना प्यार किया
जाने कितनी राते साथ गुजारी थी
जीवन की अन्तिम घडियो मे प्राण प्रिये
सतरगा स्नेहिल आँचल लहराओ तो
गीतो की बरसात करूँ, तुम गाओ तो।

अधरो से अधरो पर अद्‌भुत चित्र बने
अलसायी यह देह तुम्हारी खिल जाये
माँग सितारो से भर दूँ *शृगार करूँ*
नयन नयन से उलझे सुलझे मिल जाये
कनक भाल पर शीतल चन्दन लेप करूँ
चन्द्रवदन से घूँघट जरा हटाओ तो
गीतो की बरसात करूँ, तुम गाओ तो। ☐



सोयी पीर जगी जाती है, कौन मधुर स्वर मे गाता है।

बन्द करो मधु रस की बाते
अब न रही वे सुखमय राते
छलक उठी नयनो की गगरी
अधिक न और सहा जाता है
सोयी पीर जगी जाती है कौन मधुर स्वर मे गाता है।

हृदय न प्रेयसि प्यार माँगता
जीवन नही बहार माँगता
छा जाये पतझड धरती पर
क्यो मादक बसन्त आता है
सोयी पीर जगी जाती है कौन मधुर स्वर मे गाता है।

छिटक रही क्यो आज चाँदनी
दमक रही क्यो आज दामिनी
प्रकृति नटी का नर्तन रोको
अन्तर विकल हुआ जाता है
सोयी पीर जगी जाती है, कौन मधुर स्वर म गाता है।

मधुकर आज न गीत सुनाये
कहो वीण से आज न गाये
कवि बैठा एकान्त विरह के
गीत सृजन करता जाता है
सोयी पीर जगी जाती है, कौन मधुर स्वर मे गाता है। ❑



गीतो की सरिता को अविरल वहने दो।

जीवन पथ पर हमने क्या क्या नही किया
विष के घूँट पिये, कुछ अमृत पान किया
अँधियारी रातो मे भी हम साथ चले
एक दूसरे की वॉहो को थाम लिया
प्यार तुम्हारा जीने का आधार वना
मन की पीडा व्यथा कथा भी कहने दो
गीतो की सरिता को अविरल वहने दो।

साँझ ढले तुम नदी किनारे आ जाना
मिलकर हम तुम मधुर स्वरो मे गायेगे
प्यारा प्यारा मौसम मन की वात करे
अन्तरङ्ग कुछ वात तुम्हे वतायेगे
मुझ से मत पूछना कि कितनी पीडा है
पीडा क्यो है कैसी है, वस सहने दो
गीतो की सरिता को अविरल वहने दो।

चॉद चॉदनी के साये मे प्यार पले
रूप तुम्हारा लगे सुहाना मन भाये
अधरो से अमृत की वारिस होने दो
वोल तुम्हारे मन की पीडा दुलराये
तुम मेरे जीवन की आशा किरण वनो
अर्पित तन मन प्राण हृदय मे रहने दो
गीतो की सरिता को अविरल वहने दो। ❑

याद तुम्हारी आ जाती है



व्याकुल तन मन देख चाँदनी
मायाजाल उढा जाती है
याद तुम्हारी आ जाती है

भाल तुम्हारा चन्दन चर्चित
चन्द्रमुखी सा यदन तुम्हारा
नयन तुम्हारे गगा जमुना
अधरो पर अमृत की धारा
प्राण प्रिये वह रूप तुम्हारा
सोयी पीर जगा जाती है
याद तुम्हारी आ जाती है।

हर पल हर क्षण रसमय बाते
आत्म समर्पण की वे राते
हृदय तुम्हारा बहती सरिता
स्नान कराना आते जाते
प्राण प्रिये कैसे बतलाऊँ
बरबस मन अकुला जाती है।
याद तुम्हारी आ जाती है।

स्वर्णिम सपनो मे खो जाते
देखा करते चाँद सितारे
गीत बना कर सस्वर गाना
याद मुझे है नदी किनारे
प्राण प्रिये झकार स्वरो की
कविताओ पर छा जाती है।
याद तुम्हारी आ जाती है। ❑

स्पर्श। मुझे स्पर्श मे मत ढूँढो



क्योकि
यह एक भावना मात्र है
यह एक अहसास है
एक अनुभूति है
इसे सिर्फ अनुभव किया जा सकता है।

मुझे स्पर्श मे मत ढूँढो
क्योकि
तुम्हे भी इसका अनुमान है
तुम इसमे सम्मिलित हो
तुम इससे प्रभावित हो
इसे अनुभव करते हो।

मुझे स्पर्श मे मत ढूँढो
क्योकि
यह एक भावनात्मक अभिव्यक्ति है
यह एक आकर्षण है
यह एक मनोकामना है
एक आत्म निरीक्षण है।

मुझे स्पर्श मे मत ढूँढो
क्योकि
यह जो कुछ भी है इसे वैसे ही रहने दो
इसे कभी भी आत्मसात् करने की कोशिश मत करो
क्योकि
स्पर्श मात्र से ही अहसास जनित
उत्कण्ठा विलुप्त हो जाती है
अनुभूति समाप्त हो जाती है और उसकी जगह
ले लेते हैं अनगिनत रिश्ते नाते। ❑



प्रेम-गीतों के रचयिता
श्री मुरारीलाल डालमिया
के प्रति भावविभोर
कुछ अभिव्यक्तियाँ

श्री नथमल केडि
(साहित्य महोपाध्या

भाई मुरारीलाल डालमिया के कवि से मेरा परिचय पाँच दशक पहले हु था जब उसका कवि अपने यौवन की पखुरियाँ खोल रहा था। उस उम्र के व की कविता मे–"सब कुछ लिख दूँ तेरे नाम/गीतो की यह पावन गगा काशी मथु धाम/अधरो पर अंकित कर दूँ जो शाश्वत एक प्रणाम। जैसी पक्तियाँ सुनकर चमत्कृत सा हो जाता था। तब वे बडे उत्साह से झूम झूम कर कविताओ का प करते थे। अस्तु।

पर उसके बाद डालमियाजी की काव्य सरस्वती एकाएक सुषुप्तावस्था बल्कि ज्यादा मोजूँ शब्द होगा–मूर्छितावस्था मे आ गई। बीच बीच मे उ जागरण भी होता था क्योंकि १९८३ ८४ मे वे अर्चना की मासिक काव्य गोष्ठी शरीक होकर कविताएँ सुनाया करते थे और १९८५ मे प्रकाशित 'मधुवर्षिण (अर्चना के कतिपय कवियो के सकलन) मे उनकी कविताएँ भी प्रकाशित हुई उसके एक लम्बे अन्तराल के बाद सन १९९९ मे उनकी काव्य पुस्तक 'शाश्व एक प्रणाम हाथ मे आई तो आनन्द व सन्तोष हुआ। इतनी दीर्घ अवधि त कविताओ को अपने मे जीवित रखना बहुत ही जीवट एव लगन का काम लग श्री डालमिया ने शायद अपनी इस लगन को दर्शाने के लिए ही लिखा है– म की हर किरण को मिले ज्योति कण/इसलिए रात भर दीप जलता रहा।

पर इस बीच बहुत कुछ बदल भी चुका था। सुखी एव परितृप्त दाम्पत जीवन के बीच उनकी सहधर्मिनी दिवगत हो गई। भाई डालमिया के लिए य अनभ्र वज्रपात था वे उसके बिछोह मे दिग्भ्रमित से थे कि न जाने किस नेपथ से उनकी काव्य प्रिया का आगमन हो गया। उसने आते ही जैसे इन्हे अप बाहुपाश मे कस लिया। शायद दोनो की आँखे अश्रुपूरित थी एक की अपन जीवन सगिनी के बिछोह मे तो दूसरे की योग्य जीवन साथी मिल जाने व आकाक्षा पूर्ति से। तब से डालमियाजी दोनो को एक दूसरी मे देखने लगे–

स्पर्श हमारे प्रथम मिलन का और तुम्हारा आत्म समर्पण
अधरो की वह प्यास तुम्हारी नयनो का वह मोन निमत्रण
सच कहता हूँ प्राण प्रिये वे मादक क्षण यह मिलन यामिनी
मिलन पर्व वह कितना पावन जैसे राधा का वृन्दावन।

कविगुरु रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने लिखा है–अलौकिक आनन्देर भार/विधात जाहारे देय/ जार वक्षे वेदना अपार/तार नित्य जागरण। कविगुरु की ये पक्तिय कवि डालमिया पर पूरी तौर पर चरितार्थ होती है। इनका कहना है कि प्रीत गगा के मुक्तक इनके द्वारा नही लिखे गये बल्कि इनके मानस पर अवतरित हुए हैं–अनेक रात्रियो मे 'जार वक्षे वेदना अपार तार नित्य जागरण इन्होने किया है और भी एक बात यह कहते है कि इस काव्य सृजन मे उन्होने अपनी सरस्वत

का वरद हस्त जितना प्रत्यक्ष किया है उतना ही प्रत्यक्ष अपनी दिवगता पत्नी/प्रेयसी के सान्निध्य को किया है। वे 'शाश्वत एक प्रणाम मे कहते भी है–

'प्रेयसी के स्नेह का ऑचल / प्रणय का सगीत बन जाता
आसमाँ से बरसता बादल / इस धरा पर गीत बन जाता।
गीत की गाथा नही होती गीत का आधार होता है
प्रेम की सीमा नही होती, प्रेम का विस्तार होता है।'

सचमुच पति पत्नी के प्रणय व्यापार मे कितना आयतन होता है, कितनी गहराई होती है उसके मापने का आज तक कोई पैमाना नही बना है। एक दृष्टान्त दे रहा हूँ उस एक महान व्यक्ति का जिसने आजीवन अध-श्रद्धा व अध विश्वास को नकारा उसके विरोध मे प्रचार किया पर लोगा ने यह देखकर दातो तले अगुली दबा ली जब उनकी मृत्यु के बाद वसीयतनामा देखा गया तो मालूम हुआ अनेक वर्षो पहले दिवगता हुई पत्नी की भस्मी को उन्होने बडे यत्नपूर्वक अपनी तिजौरी मे सुरक्षित रखी हुई है और उनकी हिदायत है कि उनकी भस्मी तथा पत्नी की भस्मी को मिलाकर एक साथ गगा मे प्रवाहित की जाये। इस महान पुरुष का नाम हैं प० जवाहरलाल नेहरु। बताइये इस भावना को आप किस परिभाषा म बाँध कर देखेगे? फिर यदि कवि डालमिया कहे कि ये मुक्तक या तो मेरी सरस्वती ने लिखे है या पत्नी ने तो हमे उनकी भावना का आदर करना चाहिये।

हाँ इस बात का मैं साक्षी हूँ कि इन दिनो वे एकदम इन मुक्तको को ही जीते रहे–इन्ही मे गहरे डुबे रहे निमज्जित रहे। प्रीत गगा के नाम को सार्थक करनेवाले इनके दो मुक्तको को यहाँ उद्धृत कर मैं सुधी समाज से निवेदन करना चाहूँगा कि वे प्रीत गगा म पूरी तौर पर अवगाहन करे और तन मन को नयी ऊर्जा से अभिषिक्त करे

प्रेम एक गीत है बस गुन गुनाइये
प्रेम पूजा है इसे सबको बताइये
प्रेम अमृत धार है मिल जाय तो कही
पीजिये खुद भी इसे सबको पिलाइये।

* * *

प्रेम का नाता अमिय मकरन्द है
दो हृदय का यह अमर अनुबन्ध है
प्रेम मे जो खो गया वह तर गया
जिन्दगी का यह मधुरतम छन्द है।

इति शुभम।

श्री मुरारीलालजी डालमिया कोलकाता के काव्य रसिक समाज के पुराने परिचित रचनाकार है। रूमानी चेतना के इनके गीत पुराने मच पर बहुत लोकप्रिय रहे हैं। यही इनकी कविता की मूल सवेदना है जो इनकी परिणत वय में भी यथावत् बनी हुई है। कविता ही है जो मुरारीलालजी के मन को उम्र और साँझवेला के अवसाद से अप्रभावित बनाये रहती है और ये उल्लसित चित्त से छन्द रचते रहते हैं।

सत्तर वर्षीय श्री मुरारीलालजी के ताजा गीतो में एक युवा मन की भावाभिव्यक्ति इनकी जीवन प्रियता को ज्योतित करती है।

कविता का बुनियादी अनुशासन डालमियाजी ने आचार्य ललितप्रसाद सुकुल के सान्निध्य मे रह कर बडी जागरूकता से अर्जित किया है। इसलिये इनके छन्दों म स्खलन नही दिखाई पडता। शिल्प विधान के प्रति ऐसी सजगता केवल उन्ही में दिखाई पडती है जिसकी प्राण-नाडी के साथ कविता जुडी हुई है।

श्री मुरारीलालजी डालमिया की सृजनशील यात्रा ऊर्जा-सम्पन्न बनी रहे और भावुक मन बुढाती की उदासी से अप्रभावित रहे यही मन-कामना है।

डॉ० कृष्णबिहारी मिश्र
कोलकाता वरिष्ठ साहित्यकार

पहले पाठक की ओर से

दशको बाद मुरारी भाई को सुना फिर 'शाश्वत एक प्रणाम पढा और 'प्रीत गगा मे गोता लगाने का अवसर भी उन्हाने दिया। भीगता सा कई बार उभरा लगा मैं पिछले क्षण दूसरे शब्द ससार म था।

किनारे आकर बैठा तो सोचने लगा– काश! मैं भी किसी ऐसे ससार मे कुछ दिन रह लिया होता जैसे मुरारीभाई खोये हैं। मैं भी खोया रहता। यूँ खोये रहने मे बनी बहुरगी मन स्थितियो को उन्हाने भाषा और छन्द के विशेष शिल्प म वे स्वय को भूले-से रहे हैं। स्मृतियो को उजाला भी है 'उसे अपने साथ पाकर ही–

ध्यान लगा कर चलनेवाला मजिल पा जाता है
जिसका मन गगा जल होता पार उतर जाता है।

इस पार मे भी उनका प्यार मूर्त-अमूर्त मे साथ है तो उस पार भी वही है। वे उसे मात्र बाहर से ही नही देखते उसके भीतर को पूरा अपने मे उतारने का यत्न करते कहते है–

'नयनो की भाषा पढना आसान नही है।

ऐसे ही क्षणो मे धुधलाया सा बादल बीच मे आ जाता है। उन्ह लगता है जिसे मैं पढ देख रहा था वह सामने नही हैं कहाँ चला गया शायद बिछड गया है।

'जीवन पथ पर चलते चलते बिछड गए हम

पर ऐसे क्षण भी उनकी अन्तरगता के सामने लम्बी उम्र नहीं ले पाते। इस तरह के क्षणो पर वे झीनी झीनी ढाके की मलमल डाल देते हैं–

मुझे मिल गयी छाँव तुम्हारे आँचल की
बडी सुहानी लगती सरगम पायल की।

प्रकृति और अपने आस पास के उपादानो के सहारे छन्दो की एक लम्बी कतार अपने पाठक के सामने रखते जाते है। इस कतार मे एक साधक रूप मे अपने प्रेम के साथ ही चारों ओर के कई दृश्य देखते दिखाते हैं–

'बहुत सहज है पाँव फिसलना, बचकर चलना बहुत कठिन है।
'बहुत सहज सम्बन्ध बनाना किन्तु निभाना बहुत कठिन है।

सम्बन्धो के निर्वहन म उन्हे क्या क्या सहना पडा। यह मन स्थिति किसे दिखाएँ उसे ही बुलाते कहते हैं–

अपने कैसे हुए पराये क्या बतलाऊँ ?

व्यक्ति अपने व्यवहारिक रूप मे तो तीन काल जीता ही है। शब्द रूप मे भी यह तीनो काल उसके साथ रहते है। मुरारी भाई बीच के काल की छाया ही पकड पाते हैं। शायद इसलिए कि उन्ह यह क्षणभगुर लगता है। ये अतीत के सुखद और बिछोह के क्षणो को सहेजते हुए चलते हैं। ऐसे मे ही उन्हे अपने होने का सामर्थ्य लगता है। ये बीती बातो को याद करते हुए यूँ मन बहलाते हैं। यह भी अकेले नही अपने अतरग के साथ–

'सच कहता हूँ प्राणप्रिये ये मादक क्षण यह मिलन यामिनी।

इसी तरह गीत की बरसात मे भीगते हैं उसी सरिता मे नहाते हुए चलते है। यूँ यात्रा करते हुए जब भी उन्ह छू छू कर गुजरते क्षण टूकते से लगते हैं तब ये अध्यात्म के शब्द उन क्षणा को सुनाते लगते हैं–

मनुज मात्र परिधान बदलता जन्म अमर है, मृत्यु अमर है।

ऐसे ही किसी क्षण म मृत्यु को सामने देख कर उस से प्रश्न भी कर लेते हैं और उत्तर भी स्वय दे देते हैं–

'मौत मेरे द्वार पर तुम क्यो खडी हो मैं अमर हूँ
पाप के घट भर गए उनको उठा लो मैं अमर हूँ।

शब्द का रचना रूप अपने धारक भय से मुक्त होना सिखाता है। फिर भय प्रलोभनो का हो अथवा मृत्यु का इसी छन्द इसी लय और इसी भाषा के साथ शब्द धारक स्वय को भय से मुक्त कर लेते है। यह उनकी उपलब्धि मानी जानी चाहिए। इस पाठक को प्रेम की गगा यानी 'प्रीत गगा म नहा नहा कर किनारे बैठकर लगा कवि बीते क्षणो मे ही सपने देखने म खोया रहा है। इन मे खोया खोया भी छू छू कर गुजरते उन परिदृश्यो को पकड पाता तो शब्द रूप म उनसे उभरा यह ससार पाठक को और बडा लगता। भाषा छन्द और लय का एक और रूप उन्ह अपन करीब लगता। छू छू कर गुजरनेवाले क्षणा की छाया भर पकडने म ही कवि को लगा कि ये सजोये को इसी भाषा और इसी छन्द म बाँधने मे अपने होने का साथक्य मानते हे। यह पाठक उनके रचना ससार के व्यापक होने की कामना करता है और आशा करता है कि हिन्दी क्षेत्र दौडते समय के बीच रचे इस ससार की झलक लेगा।

श्री हरीश भादानी
वरिष्ठ कवि

कोलकाता



'प्रीत गगा' के निमित्त

श्री मुरारीलाल डालमिया का काव्य सग्रह 'प्रीत गगा' दूसरा काव्य सग्रह है। पहला 'शाश्वत एक प्रणाम' १९९९ मे प्रकाशित हुआ था। इस सग्रह मे बहुत सरस और सधे हुए गीत हैं। अत मे १२ मुक्तक दिये हुए हैं। सयोग यह बना होगा कि मुक्तको की रचना प्रक्रिया चलती रही होगी, अधिक होने पर कवि ने अलग से 'प्रीत गगा' नाम देकर मुक्तकों का सग्रह भी छपवा लिया है। इसमे भी कुछ गीत और कविता अत मे दी गई हैं। यह अपने आप में एक आश्चर्य है कि मुरारीलालजी की पत्नी और प्रेयसी एक ही शरीर के दो भावनात्मक रूप हैं। यह और कहीं शायद ही सम्भव हुआ हो। इस अकेली साधना आराधना और समर्पण भावना के लिए कवि प्रशसा का पात्र है।

'प्रीत गगा' सग्रह मैंने पढा है। प्रीत ही वास्तव मे गगा है। प्रीत नही हो तो गगा केवल पानी भर है। किस मनुष्य का मन, किस आयु मे, कितना तरल हो जायगा यह अनिश्चित ही है। मन जितना तरल होगा सवेदना भी उतनी ही बढती जायेगी। कविता सवेदनशीलता की ही लहर है। 'प्रीत गगा' एक मुक्तक सग्रह है। जीवन के अनेक प्रिय पल कवि प्राणों को विकल कर गये हैं, वही विकलता शब्द देह धर कर पक्तियो में रूपायित हो गई है। प्रेम के विषय मे कुछ पक्तियाँ अद्भुत हैं।

'डूब जाओ स्वच्छ तन मन प्राण वर लो
प्रेम का हरिद्वार है यह प्रीत गगा।'

कबीर का 'ढाई आखर' भी यही है। हरि का द्वार भी यही है। बहुत स्थानो पर एक सुभाषित लिखा मिलेगा 'प्रेम ही ईश्वर हैं'। कवि के लेखन का मूल प्रेम ही है।

'जिसका मन गगाजल होता पार उतर जाता है। पार उतरने के लिये मन का गगाजल हो जाना आवश्यक है।

'प्रेम मे जो खो गया वह तर गया
जिन्दगी का यह मधुरतम छद है।

* *

'प्रेम का सम्बन्ध ही सम्बन्ध है
जो समझ पाता नहीं मतिमन्द है
प्रेम मीरा ने किया विष पी लिया
प्रेम अमृत है अमर अनुबन्ध है।

प्रेम की अनुभूति कवि को बहुत गहन रूप मे हुई है।

'कल फिर याद तुम्हारी आयी रोया सारी रात
कुछ स्मृतियो मे कुछ गीतो मे खोया सारी रात।'

* * *

प्रेम के मैं गीत लिखता प्रेम का मैं हूँ पुजारी
प्रेम तो मरता नही है लौट जाओ मै अमर हूँ।

सासारिक मोहजाल ही है जो मनुष्य को अत तक भटकाता रहता है। कवि कहता है–

'यह धरा तो एक मायाजाल है बस
तुम स्वय से मोह का पर्दा हटा लो।

यह पर्दा हट जाय तो फिर अच्छा बुरा पाप पुण्य जीव ब्रह्म सभी को वास्तविकता का सही आभास हो जाता है। मुरारीलालजी कहते है–

क्या पाप पुण्य क्या भला बुरा इसकी परिभाषा बहुत कठिन है
मन्दिर मस्जिद मदिरालय मे अदाज लगाए जाते है।

'प्रीत गगा' के अत मे कुछ गीत भी कवि ने दिये हैं जिनकी सरसता मुक्तको से अलग है–

सोई पीर जगी जाती है
कौन मधुर स्वरो मे गाता है
बद करो मधुरस की बाते
अब न रही वे सुखमय रात
छलक उठी नयनो की गगरी
अधिक न और सहा जाता है।

* *

'याद तुम्हारी आ जाती है
व्याकुल तन मन देख चाँदनी
मायाजाल उढा जाती है।'

जीवन की सारी समस्याये भावुक मन को बहुत गहरे तक स्पर्श करती ही हैं। इस समय पैसा बहुत बडी समस्या है। सम्पूर्ण जन जीवन का केवल यही केन्द्र बन गया है। इस मृग मरीचिका मे सभी अधे हो गये हैं। मुरारीलालजी लिखते हैं–

'पैसा है मृग मरीचिका सब दौड रहे हैं
पैसे के लिये प्रियजनो को छोड रहे हैं
अब आदमी को आदमी अच्छा नही लगता
सम्बन्ध जो मधुर थे कभी तोड रहे हैं।

* * *

पैसे से ही अब रिश्ते नाते बनते
जाने पहचाने अनजाने लगते
पैसा ही भाई बाप यहाँ सबको
सब पैसे के पीछे दीवाने लगते।

भारतवर्ष मे जन्म लकर यहाँ की माटी मे रम कर भावुक व्यक्ति इस अपनी मातृभूमि के गीत भी गायेगा ही। यह भी प्रेम भावना का ही एक रग है। प्रम से अलग कुछ है ही नही। मुरारीलालजी ने भी अपने मुक्तको मे देश को और देश के नेताओ को अपने शब्द सुमन अर्पित किये हैं।

भूल गये हम गाधी और सुभाष को
भारत के गौरवशाली इतिहास को
नेताओ! शोषण समाज का बन्द करो
अर्जित कर लो जन मन के विश्वास को।

* * *

भारत देश महान हमारा नारा है
हम भारतवासी यह देश हमारा है
यही भूमि है सन्तो की रणवीरो की
मातृभूमि हित मरना धर्म हमारा है।

प्रीत गगा मुक्तको का श्रेष्ठ सग्रह है। प्रेम के अनेक रूप विशेष कर वियोग की अनुभूतियाँ अत्यन्त प्रभावशाली हैं। मुरारीलालजी ने अनेक रग और सुगधो के पुष्प चुन-चुन कर यह गुलदस्ता बनाया है। कविता प्रेमी समाज इस प्रीत गगा से अपने मन प्राणो को निर्मल करेगा। हिन्दी जगत कवि से और सग्रहा की आशा करेगा। कवि को मेरी बधाई और शुभकामनाएँ।

श्री भारतभूषण
वरिष्ठ कवि एव साहित्यकार

मेरठ



दो शब्द

'दो शब्द' मैं न भी लिखता तो भी श्री मुरारीलाल डालमिया की प्रथम कृति 'शाश्वत एक प्रणाम' न तो अचर्चित रहती और न मेरे लिखने से यह चर्चित होगी। कविता केवल विद्वता-उत्कृष्टता, शब्दाडम्बर-अलकार से पाठको को प्रभावित नही करती। उसके गीतो की भाव सहजता, हृदय स्पर्शता अनुभूति गहनता साहित्य सुधी-जनो को विशेष आकृष्ट करती है और करती है इस कारण बार बार पढने-सुनने को आतुर।

मुझे मालूम है पत्नी वियोग की असह्य पीडा ने उसके मन को व्यथित किया है जो शनै शनै शीतल होकर मन मानस मे हिम पिंड की भाँति जम गई। कालान्तर मे वही हिम पीडा भाव उष्मा पाकर कविता के रूप म प्रेम आर विरह की मुख्य द्विधाराओ मे अजस्र भाव से फूट पडी। 'वियोगी होगा पहला कवि आह से उपजा होगा गान' —यह उक्ति बहुत ही सटीक है श्री मुरारीलाल के सदर्भ मे।

यह कहना अतिशयोक्ति न होगी हमारा कवि स्वय नही काव्य सृजन करता है सम्भवत किसी अलौकिक शक्ति की प्रेरणा से वह सम्मोहन अवस्था मे काव्य-कलश के किंचित भाव कणो से 'माँ सरस्वती' का अभिषेक करता है। कवि का अन्तर्मन व्याकुल है पीडा घनीभूत हो उद्भासित होती है उसके इस गीताश मे– आसुओ से आग अन्तर की बुझाकर आ रहा हूँ। आज मै अपने हृदय का प्यार खोकर आ रहा हूँ। प्रेम की धारा भी स्पष्टतया सह प्रवाहित है– इस रूपहली चाँदनी मे, दो घडी तो पास बैठो। कामना के पुष्प लेकर आ गया तुम पर चढाने। एक युग के बाद मधुकर आ गया फिर गुनगुनाने। गेय गीतो की उत्कृष्ट शैली के लिए कवि का नाम ससम्मान लिया जायेगा।

मेरी मान्यता है रचना 'शाश्वत एक प्रणाम' काव्य प्रेमियो के बीच लोकप्रिय होगी। कवि मित्र मुरारीलाल को हार्दिक बधाई। भविष्य मे भी इसी प्रकार के सशक्त विचार उद्गार के काव्य सकलन की अपेक्षा कर सकते हैं।

नवम्बर १९९९
कोलकाता

श्री श्यामसुन्दर बगडिया
सुप्रसिद्ध कवि

'शाश्वत एक प्रणाम'

शाश्वत एक प्रणाम कविवर मुरारीलाल डालमिया की प्रथम काव्य संग्रह है। मानवीय प्रेम के मार्मिक छन्दो की थिरकन हैं। वतमान काल की गद्य काव्य रचनाएँ कुछ सीमा तक नीरसता का बोध कराती है जो मानव स्वभाव के अनुरूप है। कवि की मुक्तक रचनाएँ छन्दमय नृत्य बन मानो कल्पना के स्तर पर अपने जीवन के यथार्थ अनुभवो और सजीव भावो को शब्दो के मोती मे पिरो रही हैं। प्रेम वेदना सौन्दर्य, शृगार अतृप्ति अवसाद और निराशा की सभी प्रवृत्तियाँ इस काव्य सग्रह की विशेषता है जो लौकिक जीवन की झाँकी प्रस्तुत कर किसी अलौकिक सत्ता से भी जुडी प्रतीत होती है। यह सत्य है कि ये कवि के लिए नितात वैयक्तिक हैं परन्तु सामाजिक और स्वछन्द से भी अनुप्राणित हैं और साथ ही जीवन म प्रेम की परिभाषा को विस्तार देती हैं।

कवि प्रेम की किसी सीमा से बँधा नही मानता गीत की कोई गाथा नहीं मानता और न ही चाँदनी को भावुक ही समझता है बल्कि उसमें एक विस्तार आधार और अभिसार के अर्थ ढूढता है। दो हृदय के प्यार पर विश्वास करता है।

कवि युग चेतना के प्रति सजग है वह युग गायक और उसकी कविता युग वाणी होती है इसे बखूबी समझता है।

सरल रूप से लिखे मुक्तक अपने म गम्भीर अर्थों को छिपाये हुए हैं जो आज की आवश्यकता को देखते हुए प्रेम की निझर सरिता बहाने के साथ साथ आनन्द की वर्षा भी करते हैं।

चन्द्र चकोरी चाँदनी चातक, दीपक आँसू दर्द नयन आदि शब्द इस काव्य सग्रह मे कई बार प्रयुक्त हुए हैं। सहृदय पाठक अवश्य ही कवि के इस शाश्वत एक प्रणाम म उसकी पवित्रता को पहचानगे।

शुभकामनाओ सहित।

डॉ० वसुन्धरा मिश्र
कवयित्री

कोलकाता

कवि हमेशा सवेदना के सागर म डुबकी लगा कुछ शब्द निकाल कर ऐसी कविता का ताना बाना बुनता है जो कभी कभी शब्देतर भावनाओ को भी पकड लेती है।

कोई भी कवि या लेखक प्रशसा से या आत्मश्लाघा से कभी बडा नही होता—बल्कि आलोचना ही उसके साहित्यिक व्यक्तित्व को निखारती है।

मुरारीलालजी डालमिया प्रेम और पीडा के पारम्परिक कवि हैं। उनकी कुछ कविताओं म गुलाब की सुगन्ध है तो कुछ म नागफनी की चुभन भी है। उनकी कविताओ की रचनाधर्मिता म यदि आधुनिक कविता के नए मुहावरे भी होते तो उनका मूल्य बढ जाता।

असीम शुभकामनाओं सहित

श्री मोहनकिशोर दीवान
प्रसिद्ध कवि

कोलकाता

श्रद्धेय श्री डालमियाजी

आपका 'शाश्वत एक प्रणाम' ग्रथ जो आपने अपनी स्वर्गीय पत्नी सत्यभामा को समर्पित किया है वह वास्तव में आन्तरिक हृदय के आधार पर अपनी प्रेयसी के प्रति वर्णित की है। यह सच्चे मायने मे उसके प्रति श्रद्धाजली है, उसकी आत्मा सदव कविता की गूँज से आनन्द विभोर रहेगी।

आपने देश समाज घर की सन्तान एव कवि जगत को अद्वितीय सचित निधि समर्पित की है।

आपने लिखा है–

'सबकुछ लिख दूँ तेरे नाम गीतो की
यह पावन गगा काशी मथुरा धाम

आप पर भग्वत् की असीम कृपा है वरना इस तरह महान् कार्य सम्पूर्ण नही होता।

धन्य है आप एव आपके सहयोगी जिन्होने आपको इस तरह की धरोहर समर्पित करने योग्य बनाया।

आशा है आप भविष्य मे भी इस तरह का उत्साहिक ग्रथ प्रकाशित करते रहेगे।

आप एव आपका ग्रथ प्रणम्य है। सादर स्नेह।

श्री नेमचन्द कन्दोई

कोलकाता — उद्योगपति

शाश्वत एक प्रणाम के पश्चात 'प्रीत गगा के प्रकाशन पर मै प्रियवर श्री मुरारीलाल डालमिया को हार्दिक बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि वे भविष्य मे और भी अच्छी अच्छी कविताओ से हिन्दी जगत मे अपना एक स्थान बनाये।

शुभकामनाओ के साथ।

श्री गौरीशकर कार्यां

कोलकाता — समाजसेवी

माननीय

जुलाई माह मे आप से भेट कर हार्दिक प्रसन्नता हुई। आपकी पुस्तक 'शाश्वत एक प्रणाम' सही मायने मे प्रेम की तहेदिल से अभिव्यक्ति का अपूर्व सकलन है। पुस्तक मे प्रेम की गहराईयो एव अनबुझ पहलुओ को आपने विलक्षण कल्पना से मूर्त रूप दिया है।

पुस्तक के लिए हार्दिक साधुवाद।

साभिवादन सहित।

कोलकाता — श्री सदीप भूतोडिया



श्री मुरारीलाल डालमिया उन कवियो मे हैं जिन्होने उद्यम के साथ साहित्य की पूजा की है। उनका काव्य सृजन हर उस व्यक्ति के लिए है जो जीना चाहता है। उनकी कविताएँ गुनगुनाकर कल्पनालोक मे विचरा जा सकता है और यथार्थ को भी उनके गीतो के माध्यम से भोगा जा सकता है। यह मणि काचन सयोग विरल ही होता है। उनका पहला काव्य सग्रह 'शाश्वत एक प्रणाम की सगीतमय प्रस्तुति ने लोगो को विभोर कर दिया था। नयी काव्यमाला प्रीत गगा भी श्रेठता व भावुकता का अपूर्व सगम है।

श्री विश्वम्भर नेवर

कोलकाता

सम्पादक छपते छपते

प्रिय श्री मुरारीलालजी

नमस्ते।

मैं कलकत्ता से दिल्ली चला गया था। कल ही यहाँ लौटा हूँ।

कलकत्ता मे आप द्वारा अपनी कविताओ के सग्रह की पुस्तक के लिए कृपया मेरा आभार स्वीकार करे।

मैंने कविताएँ पढी है। मन छू लेनेवाली इन कविताओ मे मैं कवि के मन की पवित्रता और भावनाओ की गहराई के दर्शन पाता हूँ। मेरी हार्दिक बधाई।

मगलकामनाओ सहित।

गान्तोक-७३७ १०३
सिक्किम

श्री केदारनाथ साहनी
राज्यपाल सिक्किम

आदरणीय श्री मुरारीलालजी

शाश्वत एक प्रणाम गीत-सग्रह मिला। आभारी हूँ कि आपने मेरा स्मरण किया।

पुस्तक को आद्योपान्त पढ चुका हूँ। मुझे इसकी गीतात्मकता से जुडी सहज भाव प्रवणता विशेष भायी। आपका यह दर्शन स्नेह का स्रोत बहता रहे विश्व मे इसलिए प्यार का गीत गाता रहा।' मेरे विचारो से पूरी तरह मेल खाता है। आपके ये मधुगीत प्रीत सगीत लिये अमृत की बूँदे बरसाते। इस गीत वल्लरी के प्रकाशन पर मेरी बधाई एव भविष्य की शुभकामनाएँ स्वीकार करे।

सादर।

कोलकाता

श्री मिलाप दूगड
सुप्रसिद्ध कवि

हरीराम पाटोदिया २६५बी रवीन्द्र सरणी कोलकाता-७ दूरभाष २३३ ६१७८ कर्तृक मुद्रित

श्री मुरारीलाल डालमियार कविताए आछे भालवासार गानेर सुर। मूल हिन्दी कवितार सुललित कण्ठस्वर तर्जमाय कतटुकुइ वा प्रतिध्वन्नित करा जाय। तवु तार द्युति मेघेर फाँके थेके थेके झलसे उठे।

सुभाष मुखोपाध्याय
सुप्रसिद्ध कवि
कोलकाता



कवि की पहली कृति 'शाश्वत एक प्रणाम के पश्चात प्रीत गगा की रचनाये पढकर मुझे ऐसा लगा कि कवि का अपना एक मौलिक व्यक्तित्व है। मेरी शुभकामना है कि भविष्य मे भी कवि और भी उच्च दर्शन की भावभूमि पर रचना करेगा।

कन्हैयालाल सेठिया
सुप्रसिद्ध कवि व साहित्यिक
कोलकाता